

# कालिंदी धारा



Literary & Cultural Magazine  
Kalindi College, NCWEB

2019-2020



# CONTENTS

**Director's Message**

**Deputy Director's Message**

**Principal's Message**

**Coordinator's Message**

**Deputy Coordinator's Message**

**Verses from the Heart**

**Art Studio**

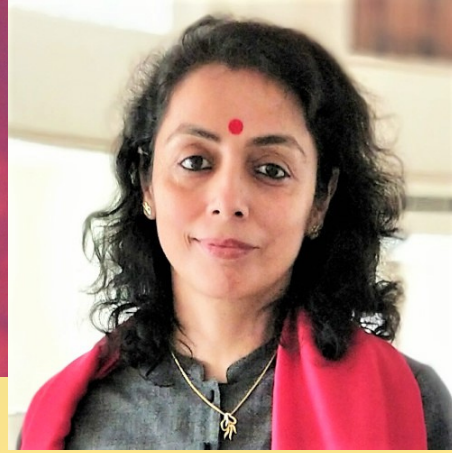
**Pen and Prose**

**Students' Union**

**Editorial Team**



# DIRECTOR'S MESSAGE...



*Human language is the attempt to express the truth that is within.  
-Swami Vivekananda*

Thoughts are the most powerful tool of mankind and penning them paves the way to create masterpieces in philosophy, literature, poetry and storytelling. Writers can weave words into powerful expressions which influence the mind and hearts of the people. NCWEB Centre, Kalindi College is all set to give a stage to its talented student writers, poets, storytellers to come out with one more edition of their magazine “Kalindi Dhara2020”.

I am hopeful that as the name of the magazine suggests; this writing endeavour will bring out the flow of new thoughts, expressions and creativity among the students. This e-magazine will be a collective representation of the creativity of the students. I have been told that the articles in the magazine are in English and Hindi languages. I congratulate the Teacher In Charge, Dr. Nivedita Giri and the faculty members of the Centre for their sincere efforts and non-teaching staff for logistic support, towards the publication of this magazine.

Regards  
Dr. Geeta Bhatt  
Director, NCWEB



# DEPUTY DIRECTOR'S MESSAGE...



“सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।  
देवा भागं यथा पूर्वे संजनानां उपासते ॥”  
(ऋग्वेद -10/191/02)

विश्व-बन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण ऋग्वेद का यह मन्त्र भारतीय संस्कृति का परिचायक है। वैदिक मन्त्रों से तत्कालीन शिक्षा पद्धति और सामाजिक विकास का आकलन किया जा सकता है। वर्तमान में भी ऐसी ही शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा समाज का आधार स्तम्भ है। शिक्षित समाज के सम्पूर्ण विकास के लिए महिला सशक्तिकरण पर बल दिया जाना अति आवश्यक है। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का प्रमुख कारक है क्योंकि शिक्षित महिला समाज के सभी प्रमुख क्षेत्रों-व्यवसाय, चिकित्सा, रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में अपने योगदान के माध्यम से समाज में सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। वर्तमान में कोरोना महामारी से लड़ने में महिला स्वास्थ्यकर्मियों का अथक प्रयास यह सिद्ध करता है कि वे किस प्रकार से आपात स्थिति में भी सेवा भावना की प्रतिमूर्ति बनकर समाज कल्याण का कार्य कर सकती हैं। एनसीवेब भी इसी ध्येय की प्राप्ति में सतत् प्रयासरत है और इसी कड़ी में कालिन्दी महाविद्यालय एनसीवेब केन्द्र भी शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा छात्राओं को निरन्तर प्रोत्साहित करता है। 'कालिन्दी धारा' कालिन्दी महाविद्यालय एनसीवेब केन्द्र की वार्षिक ई-पत्रिका है और इसमें लिखी गयी रचनाएँ छात्राओं की बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाती हैं।

कालिन्दी महाविद्यालय एनसीवेब केन्द्र की प्राचार्या, केन्द्र प्रभारी और उनकी समस्त टीम को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएँ, जिनके अथक प्रयासों के कारण इसका प्रकाशन सम्भव हो पाया। कालिन्दी महाविद्यालय एनसीवेब केन्द्र की सभी छात्राओं को शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ. उमाशंकर  
उप-निदेशक, एनसीवे



# PRINCIPAL'S MESSAGE...



Kalindi College along with its Non-collegiate Women Education Board (NCWEB) Study Centre is an institution of academic excellence and achievement. It is in the process of concretizing its legacy as the foremost educational institution amongst the emergent colleges of University of Delhi. It is heartening to know that the NCWEB Centre is bringing out its Second Issue of Kalindi Dhara (E-Magazine). The basic motto of the magazine is to bring out talents of students.

I am happy to know that the students and teachers of the Centre are putting their best efforts under the guidance of Dr. Nivedita Giri, the Centre Coordinator to promote the academic needs, art, culture and other related faculties of holistic development. I extend my heartiest greetings to all the members of NCWEB, Kalindi College and wish the magazine all success.

Dr Anjula Bansal  
Principal  
Kalindi College



# COORDINATOR'S MESSAGE...



It is my pleasure to share that we are coming out with our second issue of Kalindi Dhara. The year 2020 has been challenging in all respects. However, while the inevitable Covid-19 has shaken the world, it has also opened up many opportunities and provided us ample time to understand our own selves and our cultural ethos. The onset of the monstrous Covid-19 had initially left us clueless. But within no time we found several ways and means to take care of ourselves, our nation and our world. We all are very optimistic that this pandemic will go away soon and we start afresh again. Till then we cope up with this new 'normal' with vigour and positivity.

In this adverse situation too our students of Kalindi College Centre, NCWEB have come forward as strong human beings and contributed to 'Kalindi Dhara' with their perceptions and imaginations. The young contributors have developed and shared their novel ideas and thoughts referring to every walk of life in the 'modern' times. All the views in this e-magazine are very significant and I believe these will convey immense ideals to all our readers.

Dr. Nivedita Giri  
Coordinator, NCWEB  
Kalindi College



# DEPUTY COORDINATOR'S MESSAGE...



मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कालिंदी महाविद्यालय के नॉन कॉलेजिएट विमेंस एजुकेशन बोर्ड के द्वारा सत्र 2019-20 की अपनी वार्षिक- ई पत्रिका कालिंदी धारा का प्रकाशन किया जा रहा है कोविड-19 जैसे भयंकर काल के उपस्थित होते हुए भी समस्त अध्यापक गणो एवं छात्राओं ने अपने अथक प्रयास के द्वारा कालिंदी धारा को प्रकाशित करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया है जिसके लिए मैं डॉ निवेदिता गिरी, अपने समस्त अध्यापक गणो, छात्राओं तथा पूर्ण नॉन टीचिंग स्टाफ का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

इस पत्रिका में छात्राओं द्वारा विभिन्न रूपों में और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी रचनाओं को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है जिससे यह पता चलता है कि *NCWEB* की छात्राएं केवल पढ़ाई के क्षेत्र में ही नहीं अपितु बहूयामी प्रतिभा की भी धनी हैं। अपनी छात्राओं के भविष्य के लिए मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करती हूँ कि वह अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करे तथा अपने अध्यापक गणो से यह आशा करती हूँ कि जिस प्रकार से इस सत्र में उन्होंने छात्राओं को प्रोत्साहित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है उसी प्रकार अगले सत्र में भी वह छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें प्रशस्ति के मार्ग की ओर अग्रसर करने में हमारा पूर्ण सहयोग करेंगे |

डॉक्टर मंजू लता



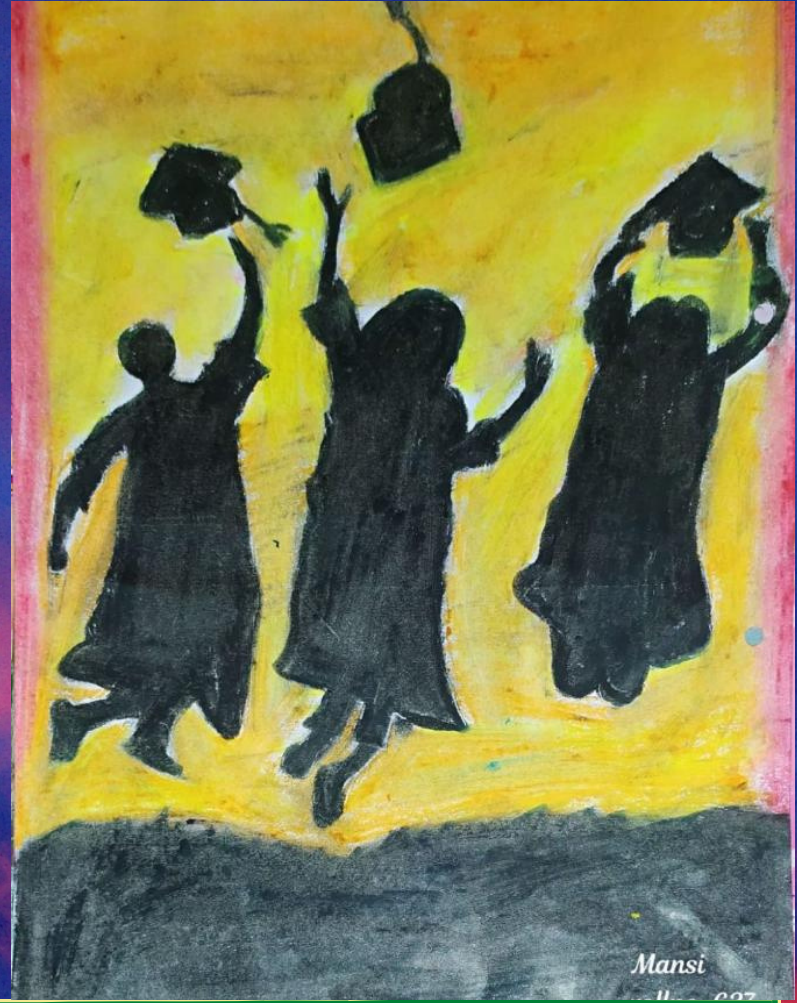
# Verses from the Heart...

## जीवन

जीवन एक अनमोल उपहार है।  
जीवन जीने का नाम है।  
जीवन संघर्ष बिना बेकार है।  
जीवन के लिए उपयोगी चरित्र का निर्माण  
है।  
जीवन की भाग दौड़ में व्यस्त संसार है।  
जीवन में सुख दुख सदा ही विराजमान है।  
जीवन में प्रत्येक ने चाहा एक मुकाम है।  
जीवन में अपनों का सहयोग होता महान  
है।  
जीवन पग पग देता सीख और ज्ञान है।  
जीवन में धैर्य की परीक्षा होती खुलेआम  
है।  
जीवन की यही परिभाषा और यही  
आयाम है।



Poem by Manisha  
B.A Programme  
3rd year



To all the flowers,  
failed to bloom this time  
this isn't the high time,  
the rain of hope will nurture you to pop  
stay;  
it will erode all the dismay,  
for your struggle to shoot  
it will pay,  
for this very time,  
i will say;  
stand again for this time,  
and stand for life time.



Geetika Kamboj  
B Com (P)



## हाथ बड़ा कर देखते हैं...

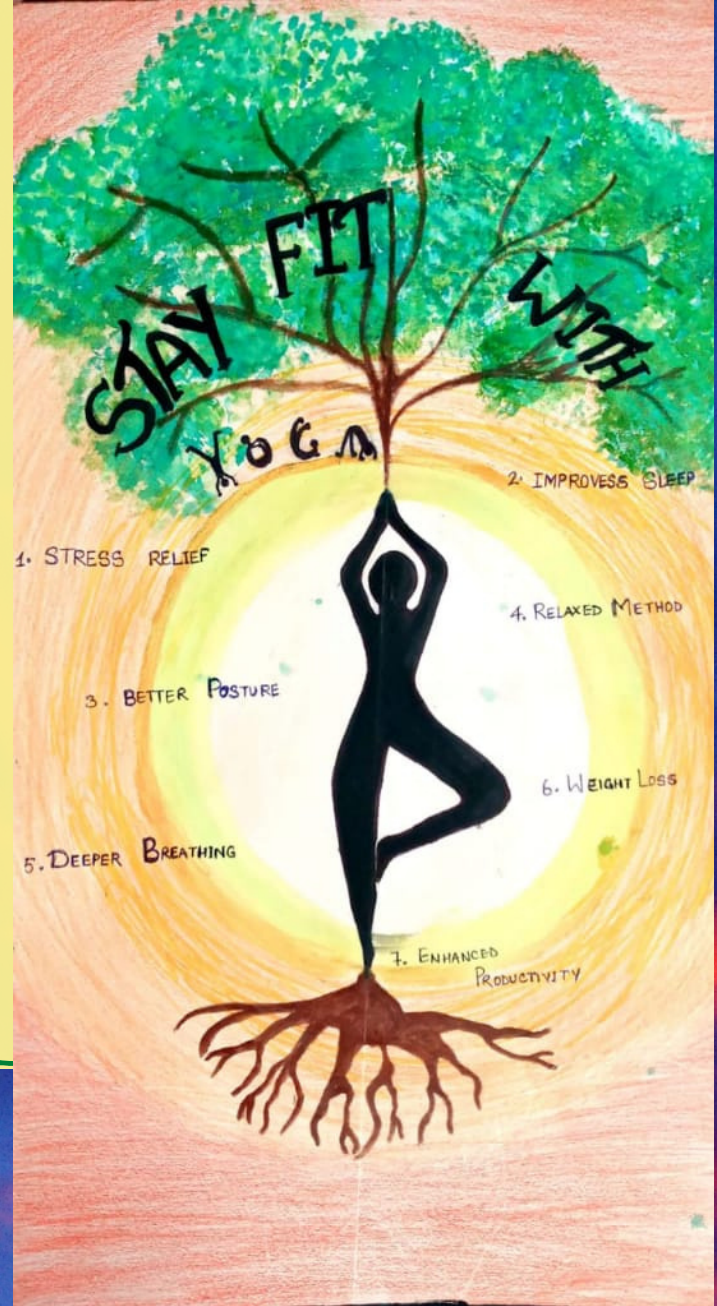
हाथ बड़ा कर देखते हैं...  
चलो एक बार हाथ बड़ा कर देखते हैं  
जानवरो को भी समाज का हिस्सा बना कर  
देखते हैं,  
माना की बोल नहीं सकते जानवर ,  
एक बार उनके मॉन को सुनकर देखते हैं।  
उनका इस्तेमाल बेहत कर लिया हमने,  
चलो इस बार उनकी मदद कर के देखते हैं।  
उनको अपने उपयोग के लिए भी डरा के देख  
लिया हमने,  
चलो इस बार ऊपर वाले से डर कर देखते हैं।  
माना की जीवन में गलती करना सामान्य हैं,  
चलो इस बार इस गलती को अपना मान कर  
दुबारा इंसानियत निभा कर देखते है।  
शायद खुद को खुदा समझ बैठे हैं,हम  
चलो इस बार खुदा को खुदा समझ कर देखते  
है!!!



Poem by Deepshikha

B. Com

3rd year





## यह कोरोना का काल है...

यह कोरोना का काल है...

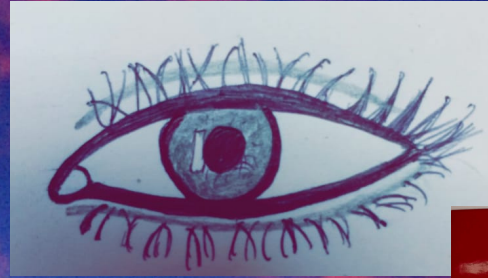
यह कोरोना का काल है,  
इसका रूप बड़ा विक्राल है।  
ज़रा संभलकर रहना भाइयों,  
वरना होगा बुरा हाल है।  
देखो... ज्यादा पास न आना,  
ज़रूरी है उचित दूरी बनाना।  
वरना होगा तुम्हें पछताना,  
क्योंकि...

दुनिया इससे बेहाल है,  
यह कोरोना का काल है।  
मास्क लगाना है ज़रूरी,  
चाहे जितनी हो मजबूरी।  
वरना रह जाएगी जिंदगी अधूरी,  
क्योंकि...

दुनिया इससे बेहाल है,  
यह कोरोना का काल है।  
समय-समय पर धोना हाथ,  
रहना तुम अपनो के साथ।  
कहीं बिगड़ न जाए बात,  
क्योंकि...

दुनिया इससे बेहाल है,  
यह कोरोना का काल है।  
लेकिन तुम न घबराना,  
इन सावधानियों को अपनाना।  
हमें कोरोना पर विजय है पाना,  
क्योंकि...

दुनिया इससे बेहाल है,  
यह कोरोना का काल है।।



Poem by Manisha  
B.A Programme  
3rd year





## LIFE IS PRECIOUS

The gracefulness of a butterfly,  
How gentle and fragile they seem.  
Gently fluttering , on a calm  
summers day.

Floating like a dream.

But sadly , there time is over,  
Hardly before it's begun .

So enjoy your special moments,  
Like a butterfly , in the sun.

## OUR COUNTRY

Our country is a garden,  
Many flowers bloom here,  
But all has different shape and  
size,

All meet with love here.

The flowers of this garden,  
And smile in the autumn,  
All are the worshipper of truth,  
Peace and love in the slogan ,  
Black hood of violence,  
Cobra has defeated fry it,  
It's forehead has written,  
The special gift of happiness.



Poems by Nishika

DK no 246/19



Paintings by Parul Sharma

BA Programme, 2nd year



## Secret

The secret of human is  
humanity  
The secret of friendship is  
loyalty  
The secret of guardian is  
worry  
The secret of nature is  
greenery  
The secret of environment is  
change  
The secret of book is  
knowledge  
The secret of beauty is  
simply city  
The secret of good dancer is  
ability  
The secret of good singer is  
sweet voice  
The secret of life partner is  
believe  
The secret of success is hard  
work  
The secret of river is flowing  
The secret of good painter  
is imagination  
The secret of tree is kindness  
The secret of good player is  
enjoy.

Shaheen Khanam

B.com 2nd year



## सुनो कोरोना...

सुनो कोरोना...!

कोरोना, करो न तुम कुछ करुणा,  
न तुम दिखती, किसीको  
न तुम बख्शती किसीको  
बच्चे, बूढ़े या हो जवान,  
हैं सभी ये तुम्हारे शिकार।  
हो तुम किसी और की धरोहर  
फिर क्यों बना रही हो यहां अपना घर  
खौफ़ तुम्हारा देश में 'लॉकडाउन' कराए  
बीमारों की संख्या बढ़ती जाए।  
तुमसे हाथ मिलाना कोई चाहे नहीं  
कोई अबतक छुटकारा तुमसे पाए नहीं  
सभी देशों में तुमने है अपना जाल बिछाया  
क्यों नहीं हो जाती अब तुम "नौ दो ग्यारह"  
घर में बैठकर खोजें तुमसे बचने के उपाय  
कोई भी तुम्हारा सामना करना न चाहे।  
कितनों की जान की हो तुम ठेकेदार  
अब तो रोक दो तुम ये कारोबार  
बहुतों ने खो दिया अपने अपनों को  
अब तुम अपने इस कहर को रोको।  
तुम थी अतिथि, कर चुके हम तुम्हारा स्वागत  
बहुत हुआ अब लौट जाओ तुम अपने घर तक  
कोरोना, करो न तुम कुछ करुणा,  
सुनो ना, कोरोना ! अब तुम लौट जाओ ना।



Sujata Kundu

BA (P), Alumna



## "अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

चीन के वुहान शहर से शुरू होकर तूने ओ कोरोना 30 जनवरी 2020 को मेरे भारत के केरल पर अपना साया डाला ।

तीन लोगों को अपने वश में जकड़ कर तूने उनको अपना शिकार बनाया और अपना संक्रमण पूरे भारत में फैलाया ।

दिल्ली में आया और अपना खौफ फैलाया और फिर तू जा पहुंचा तेलंगाना | अब राम ही जाने कैसे होगा तेरा सफाया ।

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

अब फिर तूने जो जोर लगाया जयपुर में भी कोरोना तूने अपना वायरस खूब फैलाया ।

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

अब तुझसे बचने के लिए मोदी जी ने एक उपाय निकाला 22 मार्च 2020 को जनता कर्फ्यू का ऐलान कर डाला ।

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

फिर भी तूने ओ कोरोना हार न मानी । फिर मोदी जी ने भी अब है पूरी तरह ठानी 25 मार्च 2020 को पूरे भारत में लॉकडाउन की घोषणा करवा दी ।

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

अब फिर तूने जो जोर लगाया जयपुर में भी कोरोना तूने अपना वायरस खूब फैलाया ।

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

अब तुझसे बचने के लिए मोदी जी ने एक उपाय निकाला 22 मार्च 2020 को जनता कर्फ्यू का ऐलान कर डाला ।

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

फिर भी तूने ओ कोरोना हार न मानी । फिर मोदी जी ने भी अब है पूरी तरह ठानी 25 मार्च 2020 को पूरे भारत में लॉकडाउन की घोषणा करवा दी ।

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

लॉकडाउन से उड़ गए सबके होश घर से बाहर आने जाने पर लग गई सब पररोक यह सुनकर हो गई सबकी हालत डाउन, पुलिसवालों ने अब तोहै ना जनता को घर के अंदर हीहै सुरक्षित बिठाना |

"अरे कोरोना यह तूने क्या कर डाला"

तेरे चक्कर में मोदी जी ने 22 मार्च 2020 को 5:00 बजे 5 मिनट तक थाली भी बजवाई | तब भी तूने हार ना माना 5 अप्रैल 2020 को 9:00 बजे 9 मिनट तक मोमबत्ती दिए जलाकर दिवाली बनवाई |

फिर भी तूने ओ कोरोना भारत की छोड़ी नहीं पिछाई | लॉकडाउन से हुआ है सबका बुरा हाल अब दोबारा हुआ है यह ऐलान 14 अप्रैल 2020 से लेकर 03 मई 2020 तक और बढ़ेगा लॉकडाउन का कार्यकाल जनता के मुंह से निकला "!!हाय राम!!"

अब जनता ने भी है ठानी घर में ही रहने में है सबकी भलाई जितना हो उतना दूरी बनाए वरना अस्पताल में भर्ती होने जाए इसी से होगा कोरोना तेरा अंत | जितना जल्दी हो समझ जाओ भाई, बंधु और संत | अब होकर ही रहेगा कोरोना तेरा अंत |



अंजलि दिवाकर  
प्रथम वर्ष



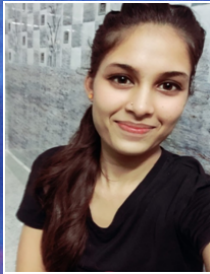
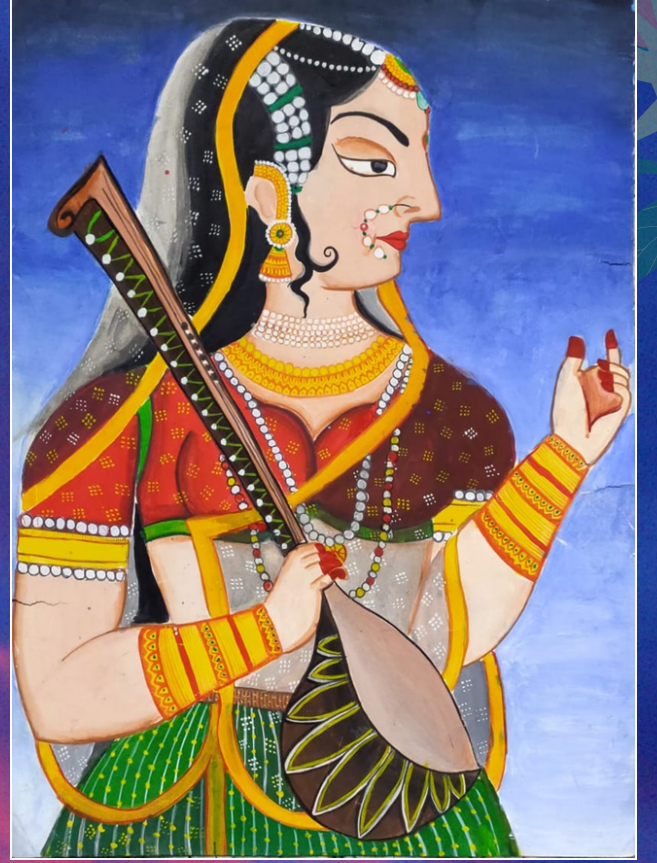
## अभी बाकी है।

नदी सा चल सरोवर सा रूक नहीं  
अपनी ख्वाहिशों को सीमित कर नहीं  
अभी ख्वाहिशों के परिंदों की उड़ान बाकी हैं  
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी है

तेरे सब्र का इम्तिहान बहुत से लेंगे  
तेरी खामोशियों को तेरी कमजोरी समझेंगे  
अभी खामोशियों के पीछे की ज्वाला बाकि हैं  
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी हैं

बिन मेहनत मिली सफलता पीतल हैं  
अन्दर से ज्वाला बाहर से शीतल हैं  
अभी सोने को कुंदन बनना बाकि है  
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी है

जो सोच लिया तूने समझो पा लिया  
सफलता की ओर कदम तूने बढ़ा लिया  
अभी सफलता का शीर्ष झुकना बाकी है  
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी हैं



Painting by  
Pooja

BA Programme,  
2nd year

Poems by Iram  
Roll No. : 86  
B.co,m 2nd Year

नदी सा चल सरोवर सा रूक नहीं  
अपनी ख्वाहिशों को सीमित कर नहीं  
अभी ख्वाहिशों के परिंदों की उड़ान बाकी हैं  
क्या फिक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकी है

अब अमीर का हर दिन रविवार हो गया  
और

गरीब है अपने सोमवार के इंतेज़ार में  
अब अमीर का हर दिन सह परिवार हो गया  
और

गरीब है अपने रोजगार के इंतेज़ार में



## समझ...

समझने में हुई है बड़ी भूल  
हमारा कार्य नहीं है अनुकूल  
पृथ्वी हमारी माता है  
साथ इसके गहरा नाता है  
इसकी सेवा कर्तव्य है  
मानवता तभी धन्य है

जीव-जंतु जलवायु  
सब साथ रहें तो बढ़ती है आयु  
वन उपवन सब हैं अति मनोहर  
विकास के नाम पर मत करो  
इनका उन्मूलन

कितने मनुष्य कृत्य अप्राकृतिक  
जो वह समझता है अपरिहार्य  
प्रकृति को तोड़ - मरोड़ कर उसने  
साकार किया  
अपना स्वार्थ और आडंबर  
धरा ने समझाया हमें कई बार  
पर हमने न सुनी

उसकी करुण पुकार  
बाढ़, साइक्लोन आदि के  
द्वारा भी हमको चेताया  
पर हमने हर बार किया  
उसे नज़रअंदाज

एक बार फिर उसने  
कोरोना द्वारा किया है प्रहार  
अब कोई चारा नहीं  
सिर्फ होना है समझदार  
हमने पृथ्वी को बहुत हानि पहुंचाई  
कैसे होगी इसकी भरपाई लेकिन

एक रास्ता है इस बार  
जिससे हम कर पाएंगे  
अपनी पृथ्वी से प्यार  
हम सबको मिलकर रहना होगा साथ  
और विपत्ति से न डरें  
मिलकर यही करना है प्रयास।

NIVEDITA GIRI  
COORDINATOR, NCWEB





# Pen and Prose

## Success Da Tadka: A Recipe

### Ingredients:-

- 1.Knowledge for greasing.
- 2.Hardwork - 2 bowls
- 3.Moral values - 1 glass full
- 4.Energy - According to requirement

### Requirements:-

- 1.A container that is your brain.
- 2.Microwave of positive attitude.
- 3.Stirrer of enthusiasm.
- 4.Determination ladle.

### Method:-

Take a container and grease it properly with knowledge. Add two bowls of Hard work and stir with the stirrer of enthusiasm. Take a glass full of moral Values and pour it into the container. Toss the contents of container with the help of determination ladle and then add energy sauce to it. Now put this mixture in microwave of positive attitude and wait till you feel the fragrance of success wafting out. This is the recipe for success.



Shaheen Khanam

B.com 2nd year







## गरीबी : एक चुनौती

गरीबी किसी भी व्यक्ति या इंसान के लिये अत्यधिक निर्धन होने की स्थिति है। ये एक ऐसी स्थिति है जब एक व्यक्ति को अपने जीवन में छत, जरूरी भोजन, कपड़े, दवाईयाँ आदि जैसी जीवन को जारी रखने के लिये महत्वपूर्ण चीजों की भी कमी लगने लगती है। निर्धनता के कारण हैं अत्यधिक जनसंख्या, जानलेवा और संक्रामक बीमारियाँ, प्राकृतिक आपदा, कम कृषि पैदावर, बेरोज़गारी, जातिवाद, अशिक्षा, लैंगिक असमानता, पर्यावरणीय समस्याएँ, देश में अर्थव्यवस्था की बदलती प्रवृत्ति, अस्पृश्यता, लोगों का अपने अधिकारों तक कम या सीमित पहुँच, राजनीतिक हिंसा, प्रायोजित अपराध, भ्रष्टाचार, प्रोत्साहन की कमी, अकर्मण्यता, प्राचीन सामाजिक मान्यताएँ आदि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। गरीबी संसार के सबसे विकट समस्याओं में से एक है, आज के समय में गरीबी को दूर करने के लिए विश्व भर में कई प्रयास किये जा रहे हैं फिर यह भयावह समस्या खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। गरीबी की यह समस्या हमारे जीवन को आर्थिक तथा सामाजिक दोनों ही रूप से प्रभावित करती है। गरीबी किसी भी व्यक्ति या इंसान के लिये अत्यधिक निर्धन होने की स्थिति है। ये एक ऐसी स्थिति है जब एक व्यक्ति को अपने जीवन में छत, जरूरी भोजन, कपड़े, दवाईयाँ आदि जैसी जीवन को जारी रखने के लिये महत्वपूर्ण चीजों की भी कमी लगने लगती है। निर्धनता के कारण हैं अत्यधिक जनसंख्या, जानलेवा और संक्रामक बीमारियाँ, प्राकृतिक आपदा, कम कृषि पैदावर, बेरोज़गारी, जातिवाद, अशिक्षा, लैंगिक असमानता, पर्यावरणीय समस्याएँ, देश में अर्थव्यवस्था की बदलती प्रवृत्ति, अस्पृश्यता, लोगों का अपने अधिकारों तक कम या सीमित पहुँच, राजनीतिक हिंसा, प्रायोजित अपराध, भ्रष्टाचार, प्रोत्साहन की कमी, अकर्मण्यता, प्राचीन सामाजिक मान्यताएँ आदि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

गरीबी संसार के सबसे विकट समस्याओं में से एक है, आज के समय में गरीबी को दूर करने के लिए विश्व भर में कई प्रयास किये जा रहे हैं फिर यह भयावह समस्या खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। गरीबी की यह समस्या हमारे जीवन को आर्थिक तथा सामाजिक दोनों ही रूप से प्रभावित करती है।

गरीबी एक दास की उस स्थिति की तरह ही होती है, जो अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने में अक्षम होता है। इसके कई चेहरे हैं जो व्यक्ति, स्थान और समय के अनुसार बदलते रहते हैं। इसे बहुत तरीकों से परिभाषित किया जा सकता है जोकि एक व्यक्ति अपने जीवन में जीता और महसूस करता है। निर्धनता एक परिस्थिति है जिसका कोई भी अनुभव नहीं करना चाहेगा हालांकि प्रथा, स्वाभाव, प्राकृतिक आपदा या उचित शिक्षा की कमी की वजह से इसे ढोना पड़ता है। वैसे तो मजबूरी में इंसान इसे जीता है, लेकिन आमतौर पर इससे बचना चाहता है। ये एक अदृश्य समस्या है, जो एक व्यक्ति और उसके सामाजिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित करता है। वास्तव में गरीबी एक बहुत ही भयावह समस्या है, हालांकि ऐसे बहुत सारे कारण हैं जो इसे बीते काफी समय से ढोने के साथ जारी रखे हुए हैं। इसकी वजह से किसी व्यक्ति में स्वतंत्रता, मानसिक और शारीरिक रूप से ठीक न रहना और सुरक्षा की कमी बनी रहती है। ये बहुत जरूरी है कि एक सामान्य जीवन जीने के लिये, उचित शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, पूर्ण शिक्षा, हरेक के लिये घर, और दूसरी जरूरी चीजों को लाने के लिये देश और पूरे विश्व को साथ मिलकर कार्य करना होगा। गरीबी एक ऐसी समस्या है, जो हमारे पूरे जीवन को प्रभावित करने का कार्य करती है। गरीबी एक ऐसी बीमारी है जो इंसान को हर तरीके से परेशान करती है। इसके कारण एक व्यक्ति का अच्छा जीवन, शारीरिक स्वास्थ्य, शिक्षा स्तर आदि जैसी सारी चीजें खराब हो जाती है। यही कारण है कि आज के समय में गरीबी को एक भयावह समस्या माना जाता है।

- Prachi Garg, BA program, 3rd year



## REBOOTING EDUCATION

COVID-19 pandemic has created a unique situation before all of us which we never witnessed before. Global economies are facing serious crisis related to unemployment, sustainability in terms of small and medium enterprises and liquidity. Recent slowdown also get exaggerated because of prolonged fight against pandemic. At this time each one of us has to rise and shoulder the national duty. We are fully aware that our colleges and faculty members are putting their best to support the students and other stakeholders, still the call is to take up important tasks of building nation. Post COVID-19, there will be new ways of teaching and learning, shifting of operations, adaption of new technology and call for self-sufficiency will be the need of hour. At this time, University of Delhi, an important stakeholder and its faculty members, who understand the nerve of the teaching and learning need to explore innovative ways of morality level suggestions. We all are working on “Rebooting our education” and deliberated on some points as follows:

### ☒ ONLINE TEACHING AND LEARNING

☒ WEBINARS- International and national

☒ DU's VIRTUAL LEARNING ENVIRONMENT

☒ APPEAL - ONLINE TEACHING-LEARNING FOR THE BENEFITS OF STUDENTS

☒ ONLINE PLATFORMS OF TEACHING- Google classroom, Hangout

☒ LEARNING RESOURCES -

ICT initiatives of MHRD, Massive open online courses, View digital courses on TV, National digital library of India, e-PG pathshala, ShodhSindhu, e-YANTRA, The spoken tutorial project, Virtual labs

☒ IT SUPPORT

☒ HEALTH CENTRE INFORMATION

We at university of Delhi engage with experts and stakeholders at national and global levels, discuss and deliberate at appropriate levels to share our thought process and identify way forward on each of the above points.

Mr. Vikas Kumar

Assistant Professor (Department of Commerce)

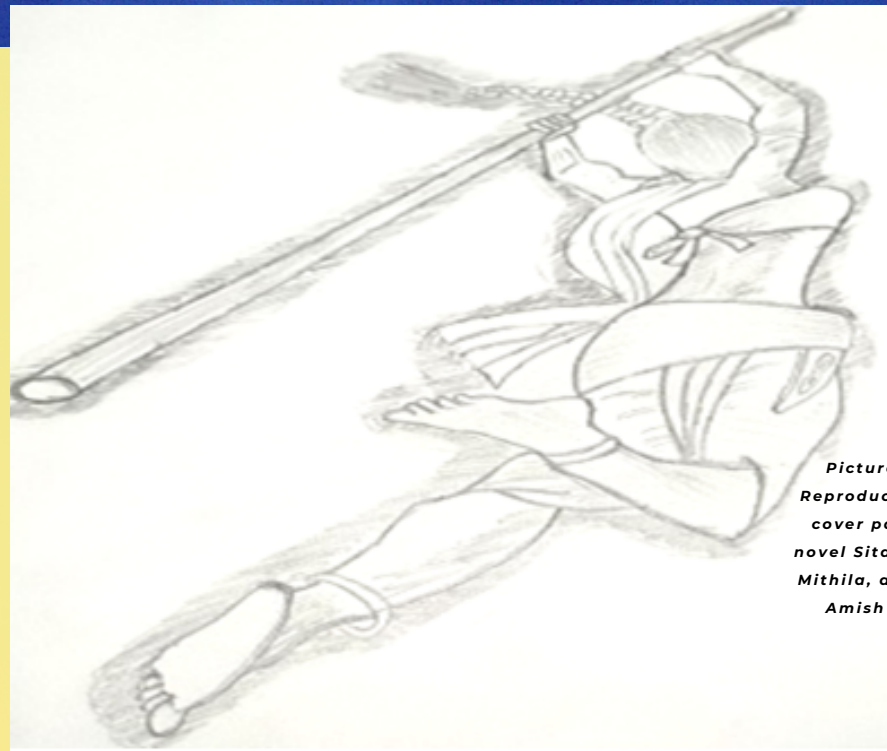
Kalindi College, Ncweb, University Of Delhi







**RAHUL MISHRA**  
(Guest lecturer, Kalindi  
College NCWEB Teaching  
Centre)



*Picture Credit:*  
*Reproduction of the*  
*cover page of the*  
*novel Sita-Warrior of*  
*Mithila, authored by*  
*Amish Tripathi*

Patriarchy is a bitter reality in India. The roots of the patriarchy are deeply entrenched in our society. It is veiled under the garb of the 'progress and advancement' that we claim to make nevertheless, the ruptures it creates are easily visible—fragmenting our society to its core. If one tries to understand the idea of women in India, one will land into a paradox and will be left, at best, bewildered. To illustrate, Bankim Chandra Chattopadhyay portrayed in his novel Anandmath, the idea of Bharat Mata where she is denoted as Kali, Durga, and Jagadatri (the protectorate of the world). On one hand, the Indian nation celebrates festivals and rituals worshipping goddesses. On the other hand, the women of the country are lacking basic freedoms, feel unsafe, face discrimination day in and day out based on gender. Although the women enjoy their political rights under the idea of the universal adult franchise but lag crucial social and economic rights which are essential for them just as they are for any other human, to realize one's agency, ascertain their choice and live a dignified life. However, the challenges of granting women her right to dignified life remain umpteen. The economic survey of 2018 highlighted the cases of the "unwanted" girl children where 'she' in many cases is not the first desired choice. Different sectors of our economy have many "invisible" women working and toiling as hard as their male counterparts without equal pay. Sexual harassment at the workplace that a woman faces easily makes her forget the unequal pay.

Empowering women should not be seen just as a means to the end goal of development. It should be an end in itself. It's high time that power structures are challenged. Society must realize that patriarchy is a double-edged sword—it constraints equality, prescribes gender roles and is a hurdle for an inclusive idea of development for all. Until this realization sets in and transforms the reality, it becomes essential that women take the lead to fight the demons of patriarchy. For that, women must turn into an invincible warrior.



## **WORLD BANK (WB) AND INTERNATIONAL MONETARY FUND (IMF)**

World Bank and IMF are playing main role in financing on international level since 1944. Today, almost every developing countries are getting loans from them, but main question is that what is this, how and when were started, and its function.

### **HISTORY**

After the world war-II lots of destruction happened in all over world. For resolving this problem, 44 countries were meet at New Hamper, U.S.A. in Bretton Wood Conference in 1944. International Bank of Restructure and Development (IBRD), and IMF both were the result of Bretton Wood Conference. India is founder member of both.

### **World Bank Group (WBG)**

The WBG is a family of five international organizations that make leveraged loans to developing countries. It is the largest and most well-known development bank in the world and is an observer at the United Nations Development Group. The president of this group is traditionally an American.

There are 5 organizations, which together known as WBG and first 2 are collectively known as World Bank, which are followings:

#### **1. INTERNATIONAL BANK FOR RESTRUCTURE AND DEVELOPMENT (IBRD)**

IBRD is established in 1944 and has currently 189 members. It provides long terms loans to middle income members governments only for infrastructure projects. It charges interest rates on loans at less than market rates. It also provides 35-40 years for repayment, which are further expandable for 10 years, i.e. loan for 50 years. Central and State governments can separately can take loans from it. India's shareholding in it 2.97%.

#### **2. INTERNATIONAL DEVELOPMET ASSOCIATION (IDA)**

IDA is established in 1960 and has currently 173 members. It also provides loans to only governments but low income members countries only. It provides loans @ 0% interest rates and it also provides non-repayable loans to very poor countries. India's shareholding in it 2.88%.

#### **3. INTERNATIONAL FINANCE CORPORATION**

IFC is established in 1956 and has currently 184 members. It provides loans to both government and private entity and at market rate of interest. It provides loans for vival commercial projects. India's shareholding in it 3.82%.

#### **4. MULTILATERAL INVESTMENT GURANTEE AGENCY (MIGA)**

MIGA is established in 1988 and has currently 181 members. It's main objective is to provide guarantee of investment to the foreign investors operating in a country against non-commercial loss/risk i.e. loss and damage to foreign investment plant and machinery, property, etc. due to (a) terrorist attack, (b) communal violence, (c) other types of risk. India's shareholding in it 2.56%.

#### **5. INTERNATIONAL CETRE FOR SETTLEMENT OF INVESTMENT DISPUTES (ICSID)**

ICSID is established in 1966 and has currently 161 members. It provides arbitration facility for investment dispute. India is not a member of it.

### **SOURCES OF FUND OF WORLD BANK GROUP**

1. Fees from members.
2. Donation from developed countries.
3. Borrowing money from international market by issuing bonds.

### **INTERNATIONAL MONETARY FUND (IMF)**

It is also established in Bretton Wood Conference in 1944. It provides short term loans for resolving Balance of Payment issues. The IMF's primary purpose is to ensure the stability of the international monetary system- the system of exchange rates and international payments that enables countries to transact each other. The president of it is traditionally a European. India is also a member of IMF.





## कर्मयोग : एक शिक्षा नीति वचन

मानव जीवन में कर्म का विशेष महत्व है। कर्मों के अनुसार ही मनुष्य को सुख-दुःख रूपी फलों की प्राप्ति होती है। इन फलों को भोगने हेतु मनुष्य को पुनर्जन्म धारण पड़ता है। जिससे मनुष्य इस कर्म-बन्धन से कभी मुक्त नहीं हो पाता। तब इस संसार-चक्र में फंसे मनुष्यों के मस्तिष्क में यही विचार उत्पन्न होता है कि यदि कर्म का त्याग कर दें, तब यह संसार-चक्र स्वयं समाप्त हो जाएगा। उस क्षण श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा कहे गए वचन हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि कर्म अवश्य करना चाहिए, किन्तु कर्म करने का एक तरीका होता है, कर्म की उस युक्ति या योग को कर्मयोग कहते हैं।

श्रीकृष्ण ने उपदेश देते हुए कहा है कि— “कर्म स्वयं बन्धन का कारण नहीं है, अपितु बन्धन का कारण तो अहंकार और फलाकांक्षा ही है। मैं संसार की सृष्टि करता हूँ, उसका पालन-पोषण करते हुए अन्त में संहार करता हूँ, फिर भी मुझे किसी भी प्रकार का कोई कर्म-बन्धन या कर्म-लेप प्राप्त नहीं होता है।” कर्मयोग के मर्म को जानने के लिए गीता में जीव को आत्मस्वरूप समझाया गया है। जिसके अनुसार आत्मस्वरूप से ही जीव न कर्ता है, न कर्म है तथा न ही





करता हूँ, इन्द्रियाँ इन्द्रियाथों में वर्तमान हैं, ऐसा मानता हूँ, वह कर्तृत्व का अहंकार नहीं करता।" इसलिए वह कर्मबन्धन से मुक्त रहता है। श्रीमद्भगवद्गीता में महर्षि ने श्रीकृष्ण से 'योगः कर्मसु कौशलम्' के द्वारा कर्म सम्बन्धी कुशलता को 'कर्मयोग' कहकर सम्बोधित करवाया है। यहाँ कुशलता से यह तात्पर्य है कि जब कोई व्यक्ति जंगल से कुशा लेने जाता है और अज्ञानता-वश कुश को जड़ से पकड़कर उखाड़ना चाहता है तो कुश को जड़ का काँटा उसे चुभ जाता है, यदि वह कुशा को ऊपर से पकड़ता है तो पत्तों में बने हुए दौत उसके हाथ को छील देते हैं। इसलिए बुद्धिमान् व्यक्ति कुशा को बीच में से पकड़कर उसे उखाड़ लेता है। ऐसे ही विवेकी पुरुष कर्म के मूल अहंकार को छोड़कर कर्म के अन्तिम फल का परित्याग कर कर्म को यज्ञ भावना से मध्य में ग्रहण करता है। इसी का नाम कर्म सम्बन्धी कुशलता है। इसी को कर्म-योग के नाम से अभिहित किया गया है। कर्मयोग की इस शिक्षा का उपदेश महर्षियों ने यजुर्वेद के 40वें अध्याय के माध्यम से दिया है। जहाँ उन्होंने इस जगत् में 'प्रशस्त कर्म करता हुआ ही मानव सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे' इत्यादि प्रार्थना मन्त्रों द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में ही ईश्वर द्वारा मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा दी गई थी।

श्रीमद्भगवद्गीता में वेद निर्दिष्ट कर्म-प्रधान शिक्षा का अनुशासन करते हुए स्वयं भगवान ने कहा है कि— "जो पुरुष कर्म में अर्थात् अहङ्कार रहित की हुई समस्त शारीरिक चेष्टाओं में अकर्म अर्थात् वास्तव में उनका न होना देखे और जो





पुरुष अकर्म में अर्थात् अहंकार युक्त पुरुष द्वारा किये हुए समस्त क्रियाओं के त्याग में भी, कर्म को अर्थात् त्याग रूप क्रिया को देखे, वह पुरुष मनुष्यों में बुद्धिमान्, योगी और समस्त कर्मों को करने वाला है।<sup>15</sup> यदि कर्म योग की यह शिक्षा हमें प्राप्त होती रहे तो हम कर्म करते हुए भी कर्म-बन्धन से मुक्त रह सकते हैं तथा कर्म-योग द्वारा शुद्ध हुए अन्तःकरण से भक्ति योग के मार्ग में प्रवेश कर ज्ञान-योग तक पहुँच सकते हैं। हमारी शिक्षा के यही तीन मुख्य-लक्ष्य हैं और हमारे जीवन को सुखमय, शान्तिमय और आनन्दमय बनाने के ये ही तीन साधन हैं।

कर्म-योग में कायिक-वाचिक-मानसिक और बौद्धिक कर्मों का निरन्तर अनुष्ठान करते हुए भी कर्तृत्व के अहंकार से मुक्त रहने की युक्ति समझायी गई है। जैसे हम श्वास लेते समय भूले से रहते हैं कि हम श्वास ले रहे हैं, ऐसे ही कर्म-योगी प्रत्येक कर्म को सहजभाव से श्वास लेने और आँखें झपकाने की तरह अनायास ही करता रहता है। इस प्रक्रिया में जहाँ कर्म-योगी में अहंकार का अभाव रहता है, वहाँ उसकी सभी कार्यों में निपुणता भी सूचित होती है। यह निपुणता अभ्यास के द्वारा अर्थात् पुनः पुनः उन कर्मों के परिशीलन के द्वारा प्राप्त की जाती है। यही कर्म-योगी का कार्यानुभव कहलाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कार्यानुभव के महत्त्व तथा उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि- “कार्यानुभव एक ऐसा उद्देश्यपूर्ण और सार्थक शारीरिक काम है, जो सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है और जिससे समाज को वस्तुएँ या सेवाएँ मिलती हैं। यह अनुभव एक सु-संगठित और क्रमबद्ध





कार्यक्रम के द्वारा दिया जाना चाहिए। कार्यानुभव की गतिविधियाँ, विद्यार्थियों की रुचियों, योग्यताओं और आवश्यकताओं पर आधारित होंगी। शिक्षा के स्तर के साथ ही कुशलताओं और ज्ञान के स्तर में वृद्धि होती जायेगी। इनके द्वारा प्राप्त किया गया अनुभव आगे चलकर रोजगार पाने में बहुत सहायक होगा। माध्यमिक स्तर पर दिए जाने वाले पूर्व व्यावसायिक कार्यक्रमों से उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के चुनाव में सहायता मिलेगी।<sup>16</sup>

शिक्षण के नवीनतम दृष्टिकोण में भी औपचारिक प्रक्रिया के अन्तर्गत अनौपचारिक शिक्षा को समाहित करते हुए रोजगार की समस्या के निदानार्थ कार्यानुभव प्रणाली को उचित स्थान प्रदान किया है। यह प्रणाली मानव को आत्म-निर्भरता प्रदान करते हुए उसे पूर्ण मानव के रूप में प्रतिष्ठित करती हुई स्वाभिमान की भावना को जाग्रत करती है। जहाँ से आत्म-स्वाभिमान की भावना जाग्रत होती है, सच्चे अर्थों में वहीं से उच्च विचार, आत्म-उन्नति और परोपकार की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। जिसे हम शिक्षा में कर्म-योग अथवा कार्यानुभव द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि यदि मानव आत्मोन्नति के साथ-साथ राष्ट्रोन्नति में भी अपनी अहम् भूमिका निभाना चाहता है, तो उसे निष्कामभाव से जन-कल्याण के कार्यों में प्रवृत्त होना चाहिए तथा नैसर्गिक गुणानुसार 'कार्यानुभव' की प्रक्रिया को अपनाते हुए जीविकोपार्जन की प्रक्रिया में निष्णात होना चाहिए। अतः कर्मयोग एवं कार्यानुभव शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं,





क्योंकि इनके द्वारा न केवल एकादश इन्द्रियों को प्रशिक्षित किया जाता है अपितु विभिन्न समाज-सुधारक-संस्थाओं के माध्यम से समाज-सेवा से सम्बन्धित भावना को भी विकसित किया जाता है। परिणामतः कार्यानुभव को प्रणाली न केवल हमें जीविकोपार्जन के साधन में निपुणता प्रदान करती है, अपितु पूर्ण मानवत्व को भी विकसित करती है।

### संदर्भ

1. श्रीमद्भगवद्गीता - 4/14
2. श्रीमद्भगवद्गीता- 5/8
3. श्रीमद्भगवद्गीता- 2/50
4. यजुर्वेद 40/2
5. श्रीमद्भगवद्गीता- 4/18
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 1986

DR. SHWETA  
DEPT. OF SANSKRIT  
NCWEB, UNIVERSITY OF  
DELHI





## नीति वचन

### नीति - वचन

1. अज्ञः सुखमाश्रयः सुखतरमाश्रये विशेषज्ञः ।  
शान्तलवदुर्विदग्ध्यं श्रद्धापि तं नरं न रञ्जयति ॥  
(मुख्य मनुष्य को शीघ्र ही प्रसन्न किया जा सकता है एवं विशेषज्ञ को और भी आसानी से अनुकूल किया जा सकता है । किन्तु थोड़ा-सा ज्ञान पाकर इतराने वाले मनुष्य को तो स्वयं श्रद्धा भी नहीं प्रसन्न कर सकते । )
2. साहित्यसंगीत कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।  
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागध्येयं परमं पशूनाम् ॥  
(साहित्य तथा संगीत की कला से शून्य मनुष्य, पूँछ और सींग रहित साक्षात् पशु ही होता है । वह बिना घास खाये भी जो जीवित रहता है यह वास्तविक गाय बैल इत्यादि पशुओं का बहुत सीमाग्य है । )
3. वरं पर्वतदुर्गेषु शान्तं वनचरैः सह ।  
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रवनेष्वपि ॥  
(बिड़ड़ पर्वतों पर जंगली मनुष्यों के साथ विचरना अच्छा है, परन्तु मूर्ख मनुष्यों के साथ इन्द्र के राजमहल में भी रहना अच्छा नहीं । )





4. परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।  
स जाते येन जातेन भाति वंशः समुन्नतिम् ॥  
( इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं मरता तथा कौन नहीं जन्म लेता । किन्तु वस्तुतः उसी मनुष्य का जन्म सफल है जिसके होने से वंश की समुन्नति होती है । )
5. कुसुमस्तवकस्यैव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः ।  
मूर्च्छितं वा सर्वलोकस्य विशीर्येत वनेऽथवा ॥  
( फूलों के गुच्छे की तरह अच्छे पुरुषों की दो ही गति हुआ करती है, या तो वह सबलोगों के मस्त्रक पर डी रहता है या वह जंगल में मुरझाकर समाप्त हो जाता है । )
6. दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यायाऽलङ्कृतोऽपि सन् ।  
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न अर्थकर ॥  
( दुर्जन विद्वान् हो तो भी उसको त्याग देना चाहिए । क्या मणि से भूषित जी सर्प अर्थकर नहीं होता ? )
7. दानं शौगो नाशस्तिश्रौ गतयो भवन्ति वित्तस्य ।  
थौ न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥  
( धन की तीन ही गति हुआ करती हैं - दान, शौग और नाश । जो व्यक्ति न दान करता है न शौगता है, उसके धन की तीसरी गति हुआ करती है । )



8. विपदि धैर्यमचान्द्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटता युधि विक्रमः।  
 यशसि चात्रिरुचिर्न्यसनं श्रुते, प्रसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥  
 (विपत्ति में धीरज, उन्नति में संतोष, सत्रा में चतुरता,  
 युद्ध में वीरता, यश में विशेष रुचि, वैदाध्ययन में  
 आसक्ति आदि गुण महात्माओं में स्वभाव से ही  
 रहा करते हैं।)

9. एको देवः केशवो वा शिवो वा  
 एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा ।  
 एको वासः पत्नै वा वने वा  
 एका नारी सुन्दरी वा दरी वा ॥

(मनुष्य का आराध्यदेव एक ही होता चाहिए फिर चाहे  
 वह केशव हो चाहे शिव, इसी तरह मित्र भी एक  
 ही होना चाहिए चाहे वह राजा हो या फक्कड़ (साधु),  
 एक ही निवास स्थान भी रहे चाहे वह नगर हो अथवा जंगल,  
 स्त्री भी एक ही हो फिर चाहे वह सुन्दरी हो या गुफा (संन्यासी-ईसा)

10. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्यो महान् रिपुः ।  
 नास्त्युद्यमो बन्धुर्यं कृत्वा नावसीदति ॥

(मनुष्यों के शरीर में रहनेवाला आलस्य उसका  
 सबसे बड़ा शत्रु है और पुरुषार्थ के बराबर  
 कोई मित्र भी नहीं है; जिसके करते रहने  
 पर मनुष्य दुःख नहीं पाता ॥)



11. कृमायन्तं फलं पुण्यां बुद्धिः इमानुसारिणी ।  
 त्वयापि सुधिया कार्यं कर्तव्यं सुविचारतः ॥  
 (मनुष्यों का सुख - दुःख उनके पूर्वकृत कर्म के  
 अधीन है और बुद्धि भी कर्म के अनुसार  
 कार्य किया करती है । फिर भी बुद्धिमान् को  
 समझ बूझकर ही कार्य करना चाहिए ।)

12. चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चलं जीवित्यौवणम् ।  
 चलान्चले च संसारं धर्म एकोहि निश्चलः ॥  
 (लक्ष्मी चंचल है, प्राण चंचल है, जीवन और  
 यौवन दोनों ही चंचल हैं इस तरह चल और  
 अचल संसार में एकमात्र धर्म ही निश्चल है ।)

13. सर्वः सर्वं न जानाति सर्वज्ञो नास्ति कश्चन ।  
 नैकत्र परिनिष्ठास्ति ज्ञानस्य परमेषु क्वचिन् ॥  
 (सब लोग सभी बातें नहीं जानते । संसार में कोई भी  
 सर्वज्ञ नहीं है तथा एक ही पुरुष में संपूर्ण ज्ञान की  
 प्रतिष्ठा नहीं है ।)

14. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
 मा कर्मफलहेतुर्नमो ते सद्गोऽस्त्वकर्मणि ॥  
 (तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों  
 में कभी नहीं । इसलिये तू कर्मों के फल  
 का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने  
 में भी आसक्ति न हो ।)



15. श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।  
 स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥  
 (अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित ही अपना धर्म अत्रि उन्नत है। अपने धर्म में जो मरना ही कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म नय को देनेवाला है।)

16. अज्ञान्याश्रद्धानश्च संशयात्मा विनश्यति ।  
 नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥  
 (विवेकहीन और श्रद्धारहित संशययुक्त मनुष्य परमार्थ से अवश्य भ्रष्ट हो जाता है। ऐसे संशययुक्त मनुष्य के लिए न यह लोक है, न परलोक और न सुख ही है।)

17. त्रिविधं नरकस्यैवं द्वारं नाशनमात्मनः ।  
 कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥  
 (काम, क्रोध तथा लोभ - ये तीन प्रकार के नरक के द्वार आत्मा का नाश करने वाले अर्थात् उसको अधोगति में ले जानेवाले हैं। अतएव इन तीनों को त्याग देना चाहिए।)

18. तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थिता ।  
 शास्त्रा शास्त्रविधानैर्कर्म कर्तुमिहाहसि ॥  
 (इससे तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है। ऐसा जानकर, तू शास्त्रविधि से नियत कर्म ही करने योग्य है।)



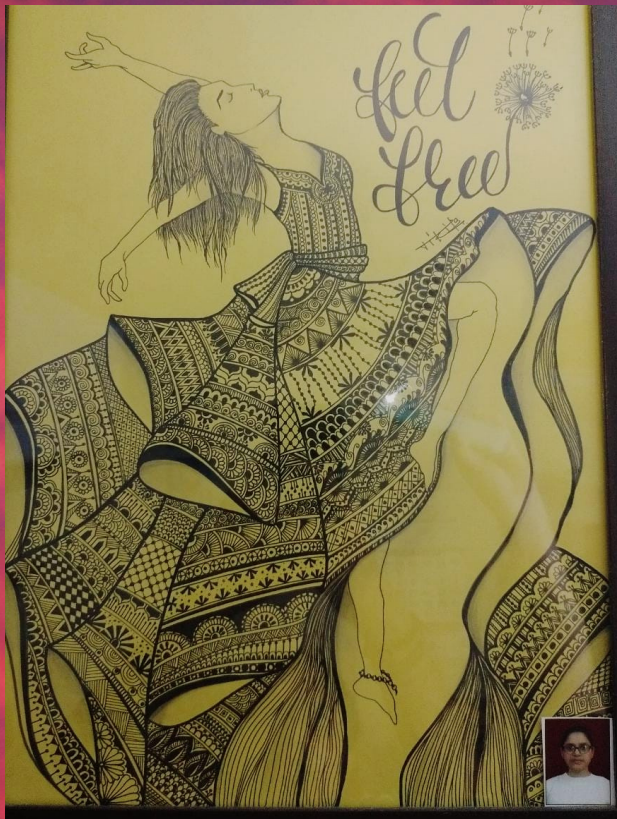
- डॉ. विशालेश कुमार ठाकुर  
 संस्कृत



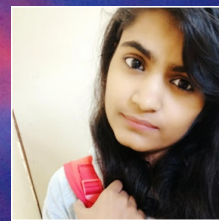
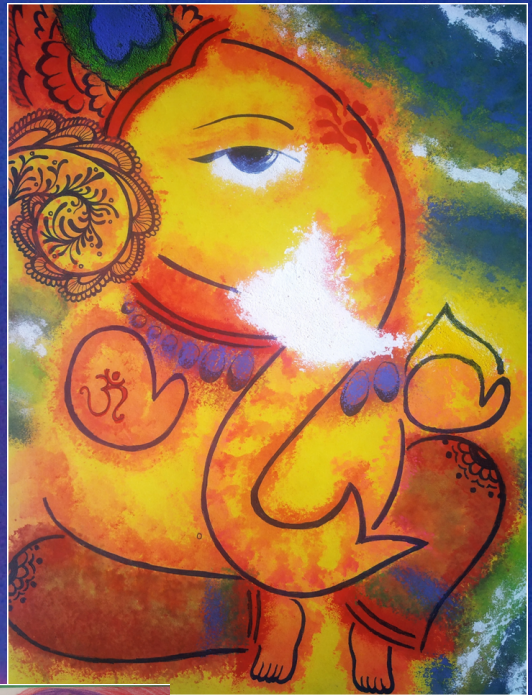
# Art Corner







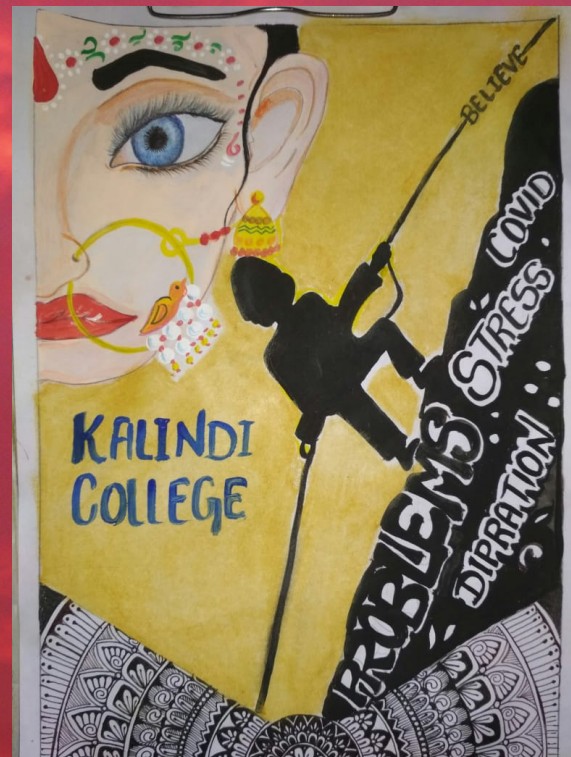
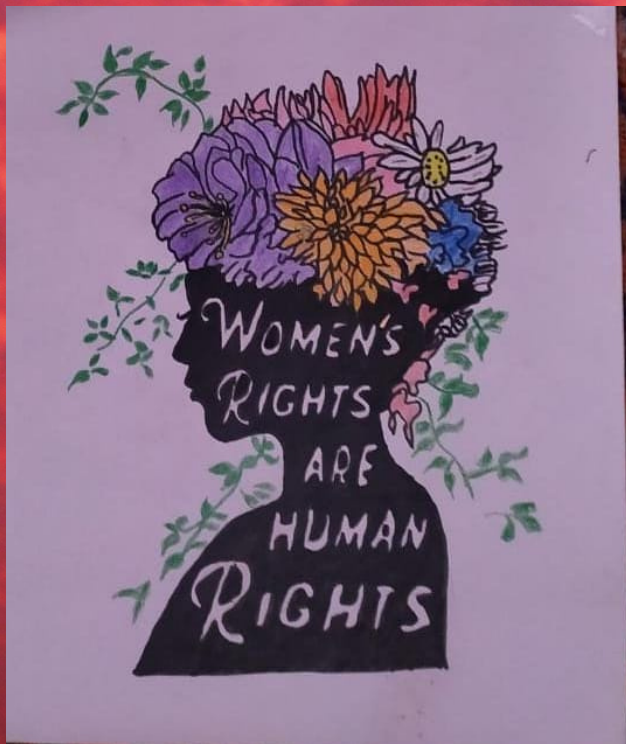




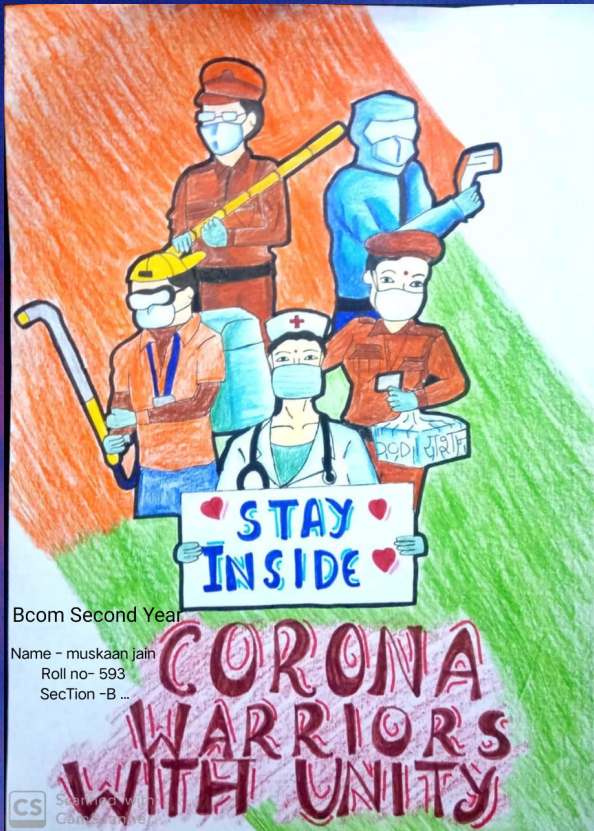
Paintings by Parul Sharma  
BA Programme, 2nd year













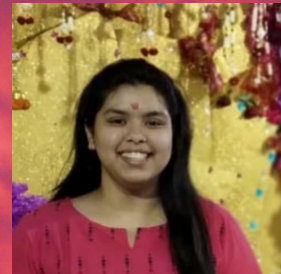
# Students' Union



**Muskan Kumari**  
President



**Varsha Kumari**  
Vice President



**Prachi Kumar**  
Joint Secretary



**Manshi Singh**  
Volunteer



**Pragya Sharma**  
Class Representative



**Shaheen**  
Volunteer



**Deepshikha Sharma**  
Class Representative



**Iqra Latif**  
Class Representative



**Khushboo Yadav**  
Class Representative



**Kajal**  
Class Representative



# Editorial Team



**Rahul Mishra,  
Department of  
Political Science**



**Shruti Gautam,  
Department of  
Hindi**



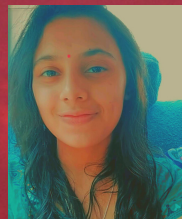
**Vimlesh Kumar Thakur,  
Department of  
Sanskrit**



**Sneha Kumari,  
Department of  
Hindi**



**Ramjee,  
Department of  
Commerce**



**Designed by  
Sanskriti,  
BA (H) POLITICAL Science,  
Kalindi College**



# THE NEW NORMAL



Divya  
B.Com, 2<sup>nd</sup> year  
616